आपातकाल में सृजन फुलवारी

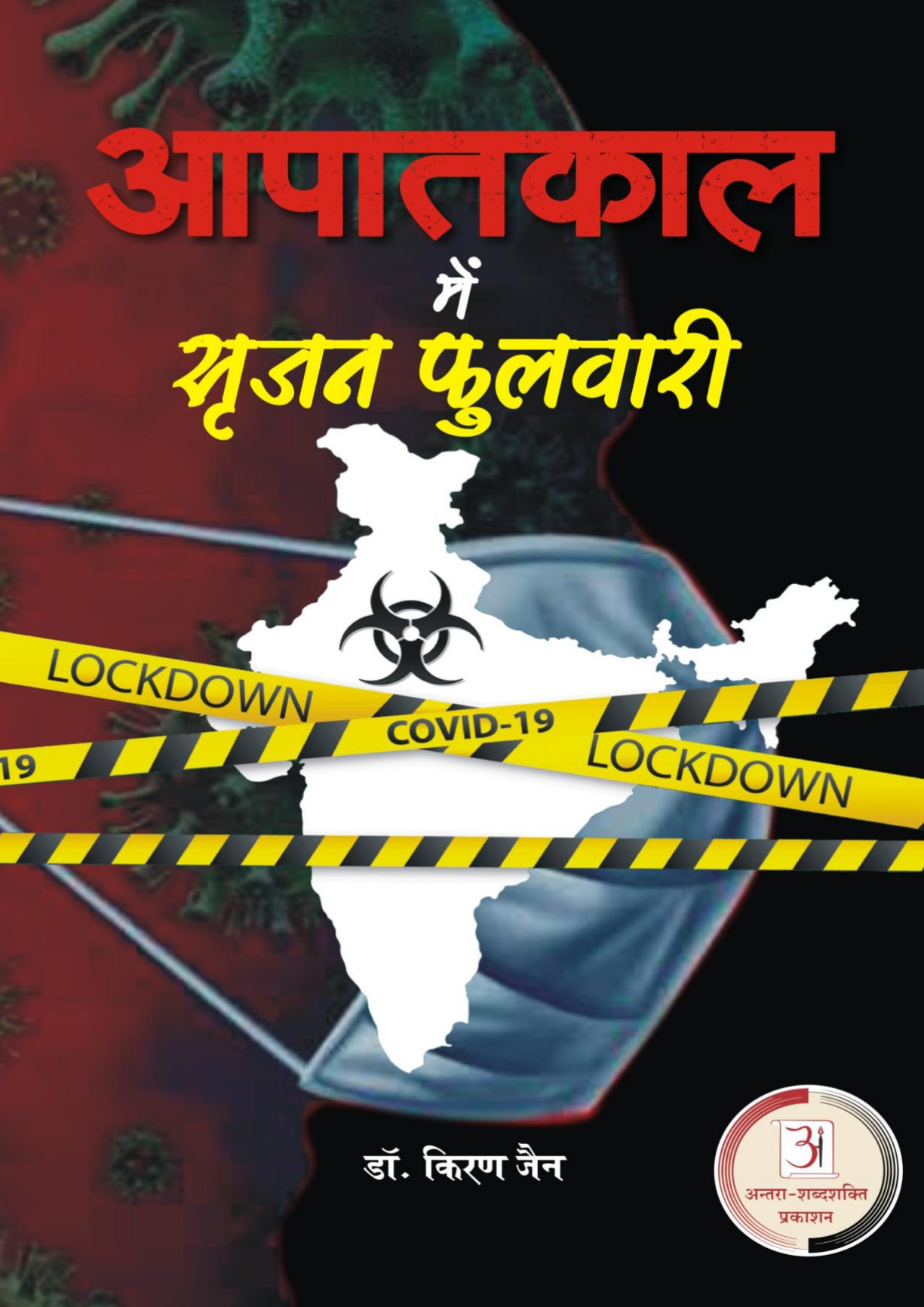

डॉ. किरण जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. किरण जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-171-8
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 डॉ. किरण जैन
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR KIRAN JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	आत्मकथ्य	6
2.	इक्कीसवीं सदी	7
3.	नाम महिमा	8
4.	कृषक	9
5.	अवसाद	10
6.	जीवन	11
7.	माटी के दीपक	12
8.	नया सूरज	13
9.	उम्मीद	14
10.	गहरा दर्द	15
11.	सौदा	16
12.	जीवन गरल	17
13.	जीवन मृत्यु	18
14.	यादें	19
15.	आफताब	20
16.	एक और दीप	21

आत्मकथ्य

यह जीवन आजकल जैसे ठहर सा गया है, सहज जिंदगी कारस तो मनुष्य वैसे ही विस्मृत कर बैठा था, कोरोना नामक महामारी ने मानो अधरों से मुस्कान ही छीन ली है।

जीवन एकरस हो कर काफ़ी उबाऊ लगने लगा है, परंतु एक रचनाकार इस बात से कतई अनभिज्ञ नहीं कि संपूर्ण आह्लाद जगत एक प्रच्छन्न विषाद से आच्छादित रहता है और तो और कवि का हृदय सदैव आशायुक्त हो कर विचार करता है कि शायद हमारा लेखन लोगों के अभाव भर दे, घाव भर दे। लोगों की भटकनें समाप्त हों और कदाचित् जीवन सी यह घिसटती गाड़ी पुनः उसी पटरी पर आ जाए जहां से इस यात्रा को विराम मिला था।

यद्यपि लिखना मेरी दुर्बलता अथवा विवशता नहीं है परंतु अनुभूति को अभिव्यक्ति दिए बिना जीवन कुछ अपूर्ण व निरर्थक सा लगने लगा है।

इन दिनों अवकाश के क्षणों में जो विविध भाव हृदय में उमड़े उन्हें पूरी निष्ठा और तन्मयता को साथ सुधी पाठकों और बुद्धिजीवी वर्ग को हाथों समर्पित करती हुई आनंदित हूं।

डॉ. किरण जैन अंबाला

इक्कीसवीं सदी

रोज़ गहरी हो रही है दर्द की नदी
क्या क्या दिखा रही है इक्कीसवीं सदी।

अपने को ढूंढने अब हम निकल पड़े
साथ साथ चल रही है नेकी और बदी।

हैरान हो रहा है क्यों देखकर तू इंसान
हर पेड़ की हर डाली कांटों से है लदी।

है लहू लुहान जब सब किसको लगाएं मरहम
जब बोई है तो काट देंगे हम भी त्रासदी।

हम ढले नहीं अभी कुछ थक से गए हैं
रुक सी गई लगती है वक्त की नदी।

नाम महिमा

नाम होंठ पर हो न हो दिल में हो ज़रूर,
लेते ही नाम उजाला बन जाता है काला।

कान्हा पी लें गर्म दूध भूल से अगर,
राधा के चरणों में पड़ जाता छाला।

मन मंदिर में राम बसा कर देखो फिर,
तन बन जाएगा एक शिवाला।

दुनिया के दुख कर देते मौन मगर,
वह तो पीता गूंगे गीतों की हाला।

जब भी राह में कभी अकेले होते हैं,
साथ हमारे चल देता वह मतवाला।

सिर को साथ झुकाया जब हमने दिल भी,
गिरने लगे तो उसने हमें संभाला।

रूह पर तन का कपड़ा तो हो ता ही है,
रूह के अंदर तू ही है रहने वाला।

कृषक

यह कृषक कह रहा है कि मैं दर्द कि एक किताब हूं।
इतनी मेरी उपलब्धियाँ कि मैं दर्द सा ही ख़िताब हूं।

मेरा रिश्ता कभी न मिटनेवाली नदियों से।
दर्द आंसू दर्द की रोटी ही पाई सदियों से।

मैने सोचा सबको दूं बरगद की ठंडी छांव।
हरी घास ओढ़ ले बिछा ले अपना सारा गांव।

जब भी सावन भादों रिमझिम मेघ बरसता।
तृषित चकित धरती का आंगन गीला करता।

हम सबके जीवन में खुशहाली हो जाती।
सबके दिन होली रात दीवाली हो जाती।

फूलों पत्तों पर जल कण मो ती की तरह चमकते।
बादल यदि न बरसें तो बे हाल हमें कर सकते।

प्रकृति और मानव मैं यदि फिर संतुलन हो जाए।
सोने और चांदी जैसा हर अन्न का कण हो जाए।

जो किसान मानव की क्षुधा मिटाने क़ा साधन बनता।
क्यों उसका भूखा बालक रोटी के टुकड़े को तरसता।

अवसाद

जिंदगी अवसाद बनकर रह गई।
एक कड़वा स्वाद बनकर रह गई।

आंख में नींद नहीं बस आंसू हैं।
क्यूं खुशी अपवाद बनकर रह गई।

प्राणों में पीड़ा समाई इस तरह
मैं दुख भरा संवाद बनकर रह गई।

टीस बनकर रह गई हूं मैं किरण
और कसकती याद बनकर रह गई।

जीवन

जीवन खाली प्याली,
चुभती ख़स्ताहाली।

इक दिन ग़म कट जाएंगे,
हमने आस लगाली।

तुमको रखा पलकों में,
अश्क़ करें रख वाली।

रोने से कम न होती,
हंसती है बदहाली।

क्या पाऊंगी फूल कभी,
पूछे सूखी डाली।

उसके घर में गर मातम,
तू न मना दीवाली।

चेहरे पर टकसाल किरण
दिल में है कंगाली।

माटी के दीपक

माटी के दीपक तेरी पूजा करे संसार,
ज्योतिर्मय हो तुम करो ज्योति का प्रसार।

कौन तुम्हें पूजे अगर न हो ज्योति का दान,
तिल तिल कर जलने में ही निहित तेरा सम्मान।

जले हवा के सबल झकोरों से हो बेपरवाह,
जग को उज्ज्वल करने की रखता पावन चाह।

तू क्षण जीवी प्राण तेरे मिट जाते है तुरंत,
पतझर से जीवन को तू ही कर सके वसंत।

शुभ बातीश्रद्धा की स्नेह तरल विश्वास,
ज्ञान रश्मियाँ बांटकरदीप नई दे आस।

नया सूरज

आंसुओं में न डुबो देना सारा जीवन।
बड़ी मुश्किल से मिला है हमें प्यारा जीवन।

पिघल उठेगा अंधेरा शहर का,
सारा सूरज के उगते ही हो जाएगा सुनहरा जीवन।

आंसुओं ने तमाम किश्त चुका तो दी थी,
किसलिए करता है फिर रोज तकाजा जीवन।

तुम्हारा दर्द बस आंखों से छलक जाना था,
उसे बहला लिया और यूं ही संवारा जीवन।

सतरंगी सपने अब पल ते है इन आँखो में,
याद के अश्क़ों ने यूं किरण निखारा जीवन।

उम्मीद

रात ढलेगी है उम्मीद,
सुबह मिलेगी है उम्मीद।

आज जो दुनिया ठहरी सी
आशा की ले आग जलेगी है उम्मीद।

बर्फ के बुत बन कर जो बैठे हैं
यह पिघलेगी है उम्मीद।

तोड़ लबों के ताले को,
ख़ामोशी निकलेगी है उम्मीद।

सोई सोई हुई जिंदगी,
करवट बदले गी है उम्मीद।

शम्मा जलाकर एक हमने भी रख ली है,
आँधी रुख़ बदलेगी है उम्मीद।

मुल्क की रुकी तरक्की किरण,
हदें तोड़ आगे निकलेगी है उम्मीद।

गहरा दर्द

दर्द गहरा था बहुत गहरा था।
रंग इसका मगर सुनहरा था।

याद बहकर निकल कहां पाई,
आंख पर आंसुओं का पहरा था।

आज तुमने भी साथ छोड़ दिया,
एक बस दर्द साथ ठहरा था।

किताबे जिंदगी का वह सफा रहा बाकी,
जिसमें ऐ दोस्त तेरा चेहरा था।

या तो लफ्जों को ना मिले मानी,
या जमाना ही सारा बहरा था।

प्यास थी कि नहीं कभी मिटती,
साथ चलता किरण के सहरा था।

सौदा

थाली सजी हुई है मगर दिल भरा हुआ,
अनाम से एहसास से दिल है डरा हुआ।

इंसानियत को जिंदा रखेगा भला कौन,
इंसान के हाथों ही इंसान मरा हुआ।

मुझको लगा मुखौटा परेशान कर रहा,
है मेरा नसीब जैसे कोई मसखरा हुआ।

हर रिश्ता सिरे से खारिज ऐसा तो न सोचा था,
एक बार जो सूखा पत्ता वह फिर कब हरा हुआ।

लेकर सारी मुस्काने आंसू की फसल खरीद,
हमसे पूछो किरण कि सौदा कितना खरा हुआ।

जीवन गरल

धर्म को कोई ना जाने पर उस पर बहस करना सरल हुआ,
शिक्षा मंदिर में दुर्घटना गंगा का जल गरल हुआ।

मंदिर भीड़ से भरे हुए हैं भक्त भावना हीन हुए,
हर इंसान परेशान दुखी यह कैसा पल हुआ।

भीतर से सब क्षत-विक्षत पर बाहर से खुश दिखते हैं,
शोर बहुत पर शब्द लापता अंतर का हिम तरल हुआ।

कोई उत्सव अब जीवन में रंग कहां भर पाता है,
हर रिश्ता खारिज है सिरे से जीना कितना सरल हुआ।

अंधकार बहुत गहरा है हाथ को हाथ नहीं सुझे,
जिसके हाथों में मशाल क्यों वही गाफिल हुआ।

क्यों इंसान को लगता है सुख बिकता बाजारों में,
दिल के दरवाजे दस्तक दे वह सुख विरल हुआ।

बंद अंधेरे कमरे और दीवारों में मन बंदी है, किरण बताओ क्या
करना है मन तो विकल हुआ।

जीवन मृत्यु

आज अंतिम पल है मौन मुखर कर जाए ना,
जीवन पत्र पर मृत्यु हस्ताक्षर कर जाए ना।

टूटे थके घायल पांव है दूर बहुत अपना गांव है
और आग बरसाती तारों की छांव है
ऐसे में कोई क्यों मर जाए ना।

जीर्ण शीर्ण नाव है मन में बहुत घाव है
न उमंग कोई न कोई चाव है
क्यों जीवन मृत्यु के नाम कर जाए ना।

दूर तक न कोई पड़ाव
बस खुद ही उभरा खुद ही सिमटा मन का हर एक भाव
क्यों बार-बार नयन भर जाए ना।

ज़िंदगी की बिसात में हर बार हारे दांव है स
मुद्र है उफ़ान पर और टूटी फूटी नाव है,
ऐसे में जिंदा रह कर कोई काम बड़ा जाए ना।

यादें

जिंदगी में दर्द की धूल दुख के कांटे हैं,
जिंदगी को हाथों से संवारना पड़ता है।

जिंदगी की चाहत पाने के लिए,
एक पल धूप में गुजारना पड़ता है।

छोड़कर चल देती है यह जब कभी,
इसको धीरे से पुकारना पड़ता है।

सपनों का कोई फूल अगर मुरझाए,
पलकों की डाली से उतारना पड़ता है।

एक एक किस्त रोज भरनी पड़ती है,
जिंदगी का यूं कर्ज उतारना पड़ता है।

वक्त धुएं के गुबार सा हाथों से निकल जाता है,
हर बिखरी याद को किरण संभालना पड़ता है

आफ़ताब

होंगे यकीनन इस दुनिया में हमसे भी कुछ बेहतर लोग,
तभी सह रहे इस दुनिया में हर गम को भी हंसकर लोग।

मेरे हाथ था नाजुक शीशा अहसासों से बना हुआ,
डर के मारे चीख पड़ी जब लेकर आए पत्थर लोग।

हिम्मत हमको बहुत मिली जब हमने यह महसूस किया,
कितने सुकून से जी जाते हैं अपना सब कुछ खोकर लोग।

लोग बहुत नादान है इनको इतनी बात नहीं मालूम,
पीले पत्तों में पाएंगे रंग हरा क्या भर कर लोग।

मन के आंगन एक शज़र था छांव में जिसकी बैठे थे,
धीरे-धीरे सूख चला तो भाग गए सब डरकर लोग।

आज किरण लगता है फिर से आफताब चमकेगा एक,
उठा रहे हैं मिलकर सारे तारीकी की चादर लोग।

एक दीप और

आओ मित्र जला दे फिर दीप एक और,
वेदना की तमस को कर दे सुनहरी भोर।

दीप ज्ञान का हो समर्पण सी सुखद बाती,
सेवा का ही तेल जला ले हम साथी।

इतना हो उजास रहे और ना ही छोर,
वेदना की तमस को कर दे सुनहरी भोर।

मंद मंद लौ इसकी काटे विष भरा धुआं,
जीवन सुधा सरिता बहे मृत्यु का सूखे कुआं।

तन बन जाए मेघ सबका नाचे मन का मोर,
वेदना की तमस को कर दे सुनहरी भोर।

कोने कोने गूंजे ध्वनि हमें चाहिए एकता,
ना मंदिर मस्जिद गिरजाघर और न कोई देवता।

उसको कर लो बंदी जोहो मानव की सांसो का चोर,
वेदना की तमस को करदे सुनहरी भोर।

श्वास श्वास में सब की आशा के दीप जलादें,
कण-कण मैं अमृत भर दे खुशियों के फूल खिलादें।

नहीं भीगने देंगे अब हम किसी नयन की कोर,
वेदना की तमस को करदे सुनहरी भोर।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

डॉ. किरण जैन

अंबाला

Email- Kiranjain@gmail.com

Mobile -9466446840

यह जीवन आजकल जैसे ठहर सा गया है सहज जिंदगी का रस तो मनुष्य वैसे ही विस्मृत कर बैठा था कोरोना नामक महामारी ने मानो अधरों से मुस्कान ही छीन ली है। जीवन एकरस हो कर काफी उबाऊ लगने लगा है। परंतु एक रचनाकार इस बात से कतई अनभिज्ञ नहीं कि संपूर्ण आह्लाद जगत एक प्रच्छन्न विषाद से आच्छादित रहता है और तो और कवि का हृदय सदैव आशायुक्त हो कर विचार करता है कि शायद हमारा लेखन लोगों के अभाव भर दे, घाव भर दे। लोगों की भटकनें समाप्त हों और कदाचित् जीवन सी यह घिसटती गाड़ी पुनः उसी पटरी पर आ जाए जहां से इस यात्रा को विराम मिला था। यद्यपि लिखना मेरी दुर्बलता अथवा विवशता नहीं है परंतु अनुभूति को अभिव्यक्ति दिए बिना जीवन कुछ अपूर्ण व निरर्थक सा लगने लगा है।

इन दिनों अवकाश के क्षणों नें जो विविध भाव हृदय मैं उमड़े उन्हें पूरी निष्ठा और तन्मयता को साथ सुधी पाठकों और बुद्धिजीवी वर्ग को हाथों समर्पित करती हुई आनंदित हूं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-171-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/